International Journal of Arts & Education Research

शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता का संकट

तपेन्द्र कुमार चौधरी*[1], अजय कुमार त्रिपाठी[2]

[1]शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म0प्र0।

[2]प्रवक्ता, एम.कैट एजूकेशन, मेरठ।

सारांश

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों अध्यापक, छात्र व पाठ्यपुस्तक में अध्यापक का स्थान काफी महत्त्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापक के निर्देशन के अभाव में सुयोग्य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो पाते हैं। अध्यापकगण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। बालक की मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं से अध्यापक का ही प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। अच्छे अध्यापक छात्रों को वांछित व्यवहार परिवर्तन में सफलता प्रदान करते हैं तथा उनको सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने में सहायता देते हैं। शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की क्यों न हो उसमें अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि होती है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों ओर विचरण करती हैं। अध्यापक को शिक्षा व्यवस्था का प्राण कहना भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि अध्यापक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवंत बनाता है। इसी कारण अध्यापक के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य में विशेष महत्व दिया जाता है।

IJAER

*Corresponding Author